शोध मंथन Vol. XIII No.III July-Sept. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

सूचना व्यवसायी के रूप में पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका

प्राप्तिः 01.06.2022
स्वीकृतः 15.06.2022

62

संजय शाहजीत
असिस्टेंट प्रोफेसर, पुस्तकालय एवं सूचना विभाग
मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर छ०ग०
ईमेलः *sanjayshahjit@matsuniversity.ac.in*

डॉ० कल्पना चन्द्राकर
असोसिएट प्रोफेसर, पुस्तकालय एवं सूचना विभाग
मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर छ०ग०
ईमेलः *drkalpana@matsuniversity.ac.in*

सारांश

सूचना की उपयोगिता के कारण सूचना समाज उभरकर सामने आया है। उपयोगकताओं की सूचना आवश्यकता को पूरा करना और संस्था की सूचना प्रबंधन को पूरा करने के लिए सूचना व्यवसायी प्रतिबद्ध है, उन्हें अपने कार्य में संतुष्टि तभी मिलती है जब चाही गई वांछित सामग्री जन सामान्यको उपलब्ध करा सके। मनुष्य के जीवन में सूचना की नितांत आवश्यकता होती है और बदलते सूचना के प्रकृति अनुसार,सूचना व्यवसायके पद में भी परिवर्तन हुआ है। आज सूचना व्यवसायी तकनीकी ज्ञान, अपने विषय में पारंगत, उचित व्यवहार और उनकी व्यवसायिक संघों से सहकारी रूप से अंतःकियात्मक संबंध जरूरी है। सूचना व्यवसायी आज श्रेणी के आधार पर विभिन्न नामों से जाने जाते है सूचना प्रौद्योगिकी आधारित सूचना समाज और डिजिटल युग में सूचना किसे और किस प्रकार से प्रदान करें यह सूचना व्यसवायी भलिभांती समझता है।

मुख्य बिन्दु

सूचना, सूचना व्यवसाय, सूचना आवश्यकता, पुस्तकालय प्रशासक।

अवधारणा

परम्परागत पुस्तकालय व्यवसाय ने समय के साथ अपना प्राचीन अवधारणासे नए विकसित रूप में उपलब्धहै। सूचना व्यवसाय आज हमारे समक्ष विभिन्न प्रणालियों,स्त्रोंतों एवं अनेक उपयोगकर्ताओं के बीच केन्द्रीय भूमिका में है क्योंकि उपयोगकर्ताओं और संस्थान विशेष की सूचना आवश्यकताओं को तभी पूरा किया जा सकता है जब उपलब्ध सूचना को सही तरीके से उपयुक्त पाठक या उपयोगकर्ता को सही तरह से पहुंचाया जाए। उपयोगकर्ताओं को विभिन्न उद्देश्यों के लिए सूचना की आवश्यकता होती है जिसके लिए सूचना व्यवसायी की सहायता आवष्यकता होती है। प्रस्तुत लेख में सूचना और व्यवसाय दो पक्ष है, सूचना व्यवसायी किसी विषेश विधा में प्रशिक्षित और अनुभव प्राप्त व्यक्ति होता है,जो अपने विशेषताओं के कारण सूचना व्यवसायी के रूप में जाने जाते है। जोकि सूचना व्यवसायी के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत है।

सूचना व्यवसाय के सिद्धांत

सूचना व्यवसाय के मूल सिद्धांत इनके प्रमुख बिंदुओं पर निर्भर करता है जो कि अमेरिकन

लाइब्रेरी एसोसिएशन द्वारा जारी नीति में स्पष्ट होता है। ये मूल सिद्धांत इनके विकास की प्रक्रिया और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट करता है जो निम्न है–

शिक्षा
अनुभव
पहुंच
गोपनीयता
प्रजातांत्रिक तरीके
सामाजिक कार्य
सेवा की भावना
व्यवसायिकता
कार्यों में विविधता

सूचना और व्यवसाय–दो तथ्य

सूचना व्यवसाय में दो तथ्य समाहित है प्रथम सूचनाएवं दूसरा व्यवसाय पद। ये दोनों पद अपने आप में काफी व्यापक अर्थ लिए हुए हैं–

सूचना

सूचना का महत्व हमारे जीवन में नितांत आवश्यक है, बिना सूचना के व्यक्ति अपना कोई भी कार्य ठीक से नहीं कर सकता। मानव समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सूचना की आवश्यकता रहती हैं। वर्तमान में मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सूचना की आवश्यकता होती है। अतः हम कह सकते हैं कि कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं जहां सूचना की जररूरत न हो। सूचना किसी भी रूप में हो सकती है उसका रूप, समय, स्थान आदि के आधार पर भिन्न–भिन्न हो सकता है। सूचना प्रथमतः जब प्राप्त होता है तो अपरिपक्व अवस्था में तथ्य, आंकड़े या डाटा के रूप में प्राप्त होता है जिसका कोई परिष्कृत स्वरूप नहीं होता। जब डाटा पर किसी प्रकार का कार्य किया जाता है तो हमारे समक्ष उपयोगी अर्थात सूचना के रूप प्रस्तुत होता है।

व्यवसाय

व्यवसाय व्यक्ति के कार्य करने के एक विशेष क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। सामाजिक प्राणी के लिए ज्ञान और प्रशिक्षण से उसका व्यवसायिकक्षेत्र परिलक्षित होता है। वह अपना जीविकोपार्जन के लिए किसी क्षेत्र में प्रशिक्षित एंव अनुभव के आधार पर अपना व्यवसाय स्थापित करता है या किसी स्थिति में, परम्परागत व्यवसाय को अपनाना पड़ता है जो परम्परावादी परिवारों में देखने को मिलता हैं अर्थात व्यवसायिक आर्थिक गतिविधियों से संबंधित क्रियाकलाप जिसमें लाभ की अभिलाशा की भावना होती है जिसके तहत वस्तुओं का उत्पाद, वितरण, विपणन आदि गतिविधियां जुड़ी होती है।

सूचना व्यवसायी

सूचना व्यवसायी वह होता है जो विशिष्ट क्षेत्र में उपाधि धारक होता एवं उनमें व्यवसाय के विशेष गुण होते हैं। आज के सूचना व्यवसायी की भूमिका बदल गयी है, प्राचीन समय में प्रायः सूचना की आवश्यकता कम रहती थी, लोगों में जागरूता की कमी थी। परंतु आज का युग सूचना का युग है प्रौद्योगिकी प्रगति के फलस्वरूपसूचना का विस्फोट तेज गति से हो रहा है। सभी को सूचना बिना

विलंब या कहें कुछ मिनट में सूचना चाहिए। इस प्रकार की सूचना प्रदान करने के लिए कुछ केंद्रों द्वारा सूचना विशेषज्ञों को रखा जा रहा है जो उस परिवेश या निकाय में प्रशिक्षित होते हैं। आज के सूचना प्रदाता व्यक्ति सूचना व्यवसायी के रूप में विभिन्न पद नाम से जाने जाते जो एक व्यवसायी के रूप में कार्य करते है। जिनमें पुस्तकालयाध्यक्ष का पद भी एक प्रमुख सूचना व्यवसायी के रूप में है क्योंकि विभिन्न प्रकार के पुस्तकालय एवं सूचना सेवा केन्द्रों द्वारा विशिष्ट सेवा प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित पेशेवरों को मौका दे रहे हैं तो पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए अनिवार्य हो जाता है कि नित नए सूचना संसाधनों के प्रति जगरूक रहें।

आज सूचना व्यवसायी के विभिन्न पद है पुस्तकालयाध्यक्ष, उप पुस्तकालयाध्यक्ष, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष,सूचना वैज्ञानिक, प्रलेखन सहायक, सूचना निर्माता, सूचना अनुवादक, सूचना अधिकारी, पुस्तकालय अधिकारी, अभिलेखागार प्रशासक आदि जो संस्थान विशेष के धारित पदानुसार जाने जाते है।

सूचना व्यवसाय की विशेषताएं

विशिष्ट विषय में प्रशिक्षित– सूचनाव्यवसायी के रूप में पुस्तकालयाध्यक्ष अपने अकादमीक संकाय में पूर्ण प्रशिक्षित होते हैं जिन्हें विषय के साथ–साथ सैद्धांतिक समझ होती है। इन्हें पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान कार्य प्रणाली एवं विविध आयामों से परिचित एवं प्रषिक्षित होता है।

तकनीकी का समावेश– सभी को बेहतर सूचना प्रदान करना इनका लक्ष्य है वर्तमान तकनीक एवं सूचना प्रौद्योगिकी में सभी को बेहतर सूचना संचालन और भी आवश्यक हो जाता है इसलिए नयी तकनीकी ज्ञज्ञन एवं क्षमता को आत्मसात करते हैं।

उचित व्यवहार की अपेक्षा– पुस्तकालयाध्यक्ष एक कुशल प्रशासक होता है उनसे बेहतर व्यवहार की अपेक्षा की जाती हैं जिनसे उपयोक्ता द्वारा वांछित मांग पर संयमित व्यवहार से प्रत्युतर प्राप्त हो सके। इसके अभाव में सूचनादाता और सूचना खोजकर्ता के बीच व्यवहारिक समन्वय न होने से उत्तम पुस्तकालय सेवा प्रभावित होती है।

समाज सेवा की भावना– पुस्तकालय पेशा सेवा की भावना से जुड़ा व्यवसाय है, जिनमें ज्ञान का संरक्षण और भावी पीढ़ी को विशाल ज्ञान सामग्री से साक्षात्कार कराना है। जिनका संरक्षण एवं संवर्धन आवश्यक हो जाता है। इस क्षेत्र में प्रशिक्षित सूचना व्यवसायी, सूचना की ज्यादा उपयोग पर जोर देता है, इस हेतु ऐसी व्यवस्था की जाती है कि उपयोगकर्ता अपने मांग से संतुष्ट हो सके।

नये ज्ञान का आत्मसातकरण– सूचना व्यवसायी जिस तरह से नये तकनीक को ग्रहण किया जाता है उसी तरह नये विचार नयी शोध एवं ज्ञान से परिचित होते है।

सहकारिता की भावना– सहकारिता अर्थात मिलजुलकर कार्य करना। सूचना व्यवसायी के रूप में पुस्तकालयाध्यक्ष विभिन्न पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्रों के साथ कार्य करते हैं जिससे उपयोक्ता को वांछित जानकारी समय पर दी जा सके।

व्यवसायिक संघ से संबंध– विकेंद्रिकृत सूचना प्रदान करने के लिए ज्यादा से ज्यादा से व्यवसायिक संघो से संबंध या सदस्यता होना आवश्यक है बिना संबंध बेहतर और नयी सूचना प्रदान नहीं की जा सकती, इसलिए सूचना व्यवसायी को व्यवसायिक संघ की सदस्यता आवश्यक है।

सूचना व्यवसायी की विभिन्न श्रेणियां

सूचना व्यवसायी के द्वारा विभिन्न कार्यों एवं प्राप्त अनुभवों के आधार पर निम्न श्रेणियां बतायी जा सकती है–

सूचना व्यवसायी की विभिन्न श्रेणियां	पुस्तकालय प्रशासक एवं प्रबंधक
	प्रसूचीकारक
	वर्गीकार
	संदर्भ पुस्तकालयाध्यक्ष
	प्रलेखनकर्ता अधिकारी
	ग्रंथमितिकार
	अनुक्रमणीकार एवं सारकरणकर्ता

पुस्तकालय प्रशासक एवं प्रबंधक– पुस्तकालय के लिए एक प्रशासनिक अधिकारी की आवश्यकता होती है जो बेहतर और प्रभावी तरीके से संचालन कर सकें, सभी प्रकार के पुस्तकालय गतिविधि संचालन के लिए उत्तरदायी वह ही होता है। इस हेतु पुस्तकालय में पुस्तकालयाध्यक्ष की नियुक्ति की जाती है। पुस्तकालयाध्यक्ष सभी प्रकार के सूचना स्त्रोतों का ज्ञाता होता है।

प्रसूचीकारक– प्रसूचीकार पुस्तकालय का प्रमुख तकनीकी अधिकारी होता है। उसे किसी ग्रंथ का सूचीकरण किस तरह से करना है और क्या–क्या सूचना ग्रंथ में दी गई है आदि के बारे में वह बेहतर तरीके से समझता और सूचना प्रविष्टि करता है।

वर्गीकार– पुस्तकालय प्रसूचीकार की तरह पुस्तकालय ज्ञान सामग्री के लिए एक अच्छा वर्गीकरण आवश्यक होता है जिससे विषयों का क्रम व्यवस्थित हो। पुस्तकालयाध्यक्ष वर्गीकरण का ज्ञाता होता है उसे विशिष्ट वर्गीकरण पद्धति का ज्ञान होता है।

संदर्भ पुस्तकालयाध्यक्ष– संदर्भ पुस्तकालयाध्यक्ष उत्तम गुण वाला सूचना अधिकारी होता है। वह संग्रहित भंडार से उपयोक्ता के लिए सूचना चयन करता है, वह सशक्त सूचना स्त्रोंतों से उपयोगी या मांगी जाने वाली सूचना का अवलोकन कर सूचना उपलब्ध करता है।

प्रलेखनकर्ता अधिकारी– प्रलेखों का व्यवस्थापन किस प्रकार करना है और उसका वर्गीकरण किस प्रकार करना है इसकी इसकी व्यवस्था पुस्तकालयाध्यक्ष करता है। जिससे उपयोगकर्ता के मांग करने पर या ज्ञान सामग्री आवश्यकतानुसार सर्वसुलभ हो सके।

ग्रंथमितिकार– ग्रंथमितिकार ग्रंथ का विशेषज्ञ होता है, साहित्यिक वृद्धि व आकार, आवधिक प्रकाशनों की आवृत्ति का अध्ययन, ग्रंथ संग्रहांशो का विस्तार अन्य प्रलेखों की उपयोगिता, अनुक्रमणीत सामाग्री का अध्ययन आदि से संबंधित प्रश्नों का उत्तर पुस्तकालयाध्यक्ष प्रदान करता है।

अनुक्रमणीकार एवं सारकरणकर्ता– प्रलेखों से संबंधित विविध अनुक्रमणीकाओं का निर्माण अनुक्रमणीकार करता हैं। वर्षो से निरंतर अनुक्रमणीकरण से इस कार्य में दक्ष होते है। सारकरण के लिए विस्तष्त लेख से संक्षिप्त में विशेष सार निकालना सारकरणकर्ता द्वारा किया जाता है।

21वीं शताब्दी में सूचना व्यवसायी की भूमिका

पूर्व कालावधि का अध्ययन करें तो ज्ञात होता है कि प्राचीन समय में ज्ञान लिखित अवस्था में नहीं था प्रकाशनों का अभाव था। पुस्तकालय का अस्तित्व नहीं था केवल संग्रहांश के रूप में

उपयोग होता था। पुस्तकालयाध्यक्ष का कोई व्यवसाय नहीं था। विकासात्मक गतिविधियों के फलस्वरूप ब्रिटिशकाल में विविध विद्वत संस्थानों की स्थापना की गयी और उन संस्थानों में पुस्तकालयों को स्थापित किया जहां पुस्तकालय व्यवसाय में पारंगत कार्मिकों को पदस्थापित किया गया, जिससे पुस्तकालयाध्यक्ष एक व्यवसाय के रूप में आया।

वर्तमान परिदृश्य की स्थिति अधिक विकसित और अकल्पनीय है। सूचना प्रौद्योगिकी आधारित सूचना समाज और डिजिटल युग का प्रभाव है। सूचना उपयोक्ताओं की अपेक्षा और आवश्यकता हेतु यह नितांत आवश्यक हो गया है कि सूचना व्यवसायी इसके लिए तैयार रहे। व्यवसायी अपनी–अपनी भूमिका समझे और सूचना संसाधानों का बेहतर संग्रहण और संकलन एवं प्रौद्योगिकी आधारित सूचना की मांग को पूरा करें। इसलिए डिजिटल युग में इंटरनेट आधारित सूचना उत्पाद और विभिन्न डाटाबेस, मेटाडाटा आधारित सूचना आवश्यकता समय की मांग है।

निष्कर्ष

पुस्तकालयाध्यक्ष सूचना व्यवसायी के रूप विभिन्न प्रणालियों एवं सूचना स्त्रोतों का प्रयोग करता है, हर परिवर्तन के लिए तैयार रहता है जिससे उपयोक्ता को सूचना से संतुष्ट किया जा सके। सूचना व्यवसाय में प्रशिक्षित और अनुभव के माध्यम से बेहतर पाठक की सूचना आवश्यकता और सूचना समस्या से समयानुसार समन्वय के साथ चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार रहते है। मूल विशेषता यही है कि पुस्तकालयाध्यक्ष का व्यवसाय जन सामान्य एवं सूचना चाहने वालों के लिए समाज सेवा की भावना से जुड़ा व्यवसाय है।

संदर्भ

1. Chinwe, V. Anunobi and Others. (2017). Library and Information Science Propfessionals' use of published research. Nigeria. Pg. **001-007.**
2. Warrier, Nirupama. (2015). Role of Library and Information Professionals in Web 3.0 Era,10th International CABLIBER. Pg. **517-523.**
3. शर्मा, अरविंद कुमार. (2012). ई सूचना स्त्रोत एवं सेवाएं. एसएस पब्लिकेशनः नई दिल्ली. पृष्ठ **247.**
4. https://egyankosh.ac.in/handle/123456789/58367.
5. https://limbd.org/role-of-library-information-professionals-in-digital-era/.
6. http://www.nou.ac.in/econtent/MLIS%20Paper%20I/MLIS%20Paper-I%20Unit-13.pdf.
7. https://www.vmou.ac.in/slm.
8. https://www.cilip.org.uk/.
9. https://www.sciencedirect.com/topics/social-sciences/information-library-profession.
10. https://southernlibrarianship.icaap.org/content/v10n03/ahmad_p01.html.